ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 8
Issue 2
15 July, 2017
शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

रमेशचन्द्र शाह की कथा साहित्य में सामाजिक चेतना

बीज शब्द :

रमेशचन्द्र शाह, हिन्दी कथा साहित्य, अयोध्या काण्ड, सामाजिक चेतना।

समाज केवल मनुष्य तक ही सीमित नहीं है, तथापि वह समस्त प्राणी-वर्ग में प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होता है। जीव-जगत में मनुष्य सर्वाधिक बुद्धि-सम्पन्न प्राणी है। कालान्तर में मनुष्य ने समाज के विश्लेषण की आवश्यकता का अनुभव किया और समाज के विषय में जनसाधारण का ज्ञान प्रखर करने के लिए समाज को शास्त्र के रूप में स्वीकार कर लिया। जैसे-जैसे मनुष्य-वसासतों में वृद्धि होती गई, वैसे-वैसे समाज की जटिलताएँ बढ़ती गई। मनुष्य का स्वार्थ परस्पर टकराने लगा। परिणामस्वरूप समाज की विश्रृंखलाएँ भी प्रकट होने लगीं। समाज के अन्दर निर्मित वर्गो के परस्पर विरोधी हित वैमनस्य की सृष्टि करने लगे। यहीं से संघर्ष का इतिहास प्रारम्भ होता है। मानवीय स्वार्थो की आधारशिला पर ही समाज की संरचना प्रारम्भ हुई। इसी कारण मनुष्य ने समाज के अंतर्गत ऐसे मूल्यों की स्थापना की जिससे उनकी स्वार्थ-सिद्धि होती थी। ईश्वर प्रदत्त शाश्वत मूल्यों की स्थापना के लिए समाज की रचना नहीं की गई, बल्कि अनेक नियमों के द्वारा व्यक्ति को अनेक कर्तव्यों में बाँधा गया जिससे मनुष्य परस्पर हित-साधना में रत हो सकता है।

*****

राजेन्द्र सिंह बिष्ट
शोधछात्र, हिंदी विभाग,
राजकीय स्ना0 महाविद्यालय,
बागेश्वर (उत्तराखण्ड)
E-mail: rajubisht1974@gmail.com
मो0 - 9412909681

रमेशचन्द्र शाह की कथा साहित्य में सामाजिक चेतना

रमेशचन्द्र शाह की ख्याति निबन्धकार एवं समालोचक के रूप में भी है। उनकी रचनाएं अंग्रेजी तथा हिंदीतर भारतीय भाषाओं में अनूदित होती रही हैं। कुमाऊँ के अन्य समकालीन कथाकारों की भाँति सामाजिक कहानियाँ भी लिखी है। इनकी आंचलिक जीवन संदर्भों में कस्बाई मनोप्रवृती पर आधारित कहानियों की संख्या सर्वाधिक है। रमेशचन्द्र शाह कृत 'आखिरी दिन' उपन्यास में सामाजिक आदर्श को व्यक्त किया है। इस उपन्यास का पात्र चक्रवर्ती द्वारा कहे गये ; ''स्मृतियों, संस्कारों, आशाओं–आकांक्षाओं की–उस समूची दुनिया को जो पलक मारते समाप्त कर सकते हैं, उससे अधिक जानने–पहचानने योग्य, उनसे अधिक निकट आत्मीय और सगे मेरे और कौन होंगे । कमाल की बात हुई कि नहीं कि मैं उन्हीं को नहीं जानता जो फिलहाल मेरे विधाता हैं, प्रभु हैं।''[1] इस उपन्यास का पात्र चक्रवर्ती द्वारा कहे शब्द सामाजिक आर्दश व प्रेम को व्यक्त करता हैं।

रमेशचन्द्र शाह कृत 'अंधड़' कहानी में उच्च वर्ग का दिखावा के प्रति अपनी झुझलाहट व्यक्त की है; ''शाम को मैं अक्सर घूमने निकल आता हूँ, इस लम्बे–चौड़े राजमार्ग पर जिसके एक ओर निहायत खुशनुमा बंगलों की कतारें है, करीने से कटी छँटी बाड़ और उसके भीतर झिल–मिलाता बगीचा और मखमली लान। मुझे अपनी जिन्दगी फूहड़ और असहय लगने लगती है। सिंचे हुए लॉन पर टहलने या आराम से बतियाने उन लोगों से मुझे नफरत होती है। मुझे वे लूटेरे हरामखोर लगते है।''[2] इस कहानी में कथाकार ने समाज द्वारा बनाये गये लम्बे चौड़े राज–मार्ग एवं निहायत खुशनुमा बंगलों, झिलमिलाता बगीचा और मखमली लान थे। सब दिखावा लगता है अन्दर कुछ नहीं है, मानव–मानव के काम न आ सके ये समाज है।

रमेशचन्द्र शाह की 'इस वक्त भालेराव' कहानी में मिसेज कपाड़िया द्वारा कुत्ते को अंग्रेजी सिखाते हुए एक प्रकार से उच्च वर्गीय प्रदर्शन प्रियता ही है; ''यू नाटी बॉय कम हियर .... ''[3] मिसेज कपाड़ियों अपने कुत्ते को अंग्रेजी सिखा रही है। इनकी 'आज की तारीख' कहानी में उच्च वर्गीय दिखावा चित्रित किया है। इस कहानी का पात्र सुरेश उच्च वर्गीय दिखावा के कारण गहरा दु:ख एवं क्रोध व्यक्त करता चित्रित होता है। उसके मित्र अतुल की बहन सुजाता का विवाह है किन्तु विवाह में दिखावा के कारण, विवाह समारोह से लौट आता है। उसके पिता के द्वारा विवाह समारोह से लौट आने का कारण पूछने पर वह विवाह के प्रदर्शन के प्रति अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहता हैं; ''मैं वहाँ गया था। मगर घूम–फिर के लौट आया, वह बोला सड़क के दोनों तरफ आधे मील तक कारें ही कारें खड़ी थीं। मेरा तो दिमाग भन्ना गया। ऐसा तो राजों–महाराजों के यहाँ भी नहीं होता होगा, आखिर किस को दिखाने के लिए यह सारा तमाशा खड़ा किया गया ? इसका मतलब क्या है ? कितना अश्लील कितना फूहड़ लगता है यह सब। मन कर रहा था बम से उड़ा दूँ सबको।''4 इस कहानी के पात्र सुरेश अपने पिता को अपनी युनिवर्सिटी में दिन दहाड़े कैसा भ्रष्टाचार पनप रहा है उसके बारे में बताता : ''आपको पता है युनिवर्सिटी में दिन दहाड़े कैसा भ्रष्टाचार पनप रहा है ? यह देखिए आपके कलिग मिश्रा जी की लड़की जो हमारी क्लास में पढ़ती थी और बमुश्किल पचास परसेंट लाई थी। प्रीवियस में अभी यह काला धंधा चल रहा है। कब से आपके नगर में और आपको कोई खबर नहीं। लीजिए, हम पक्के सबूत इकट्ठा कर लाए है। आप बताइए इसकी थ्योरी, इस अंधेर गर्दी को तो कतई अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए।''5 बात उनकी सही थी। कहानी में समाज में पनप रहे भ्रष्टाचार चित्रित हुआ है।

इनकी 'इस वक्त भोलेराव' कहानी में माँ–बेटी के बारे में समाज की सोच को व्यक्त किया गया है ''कमाल की औरत है। बरसों की लड़ाई के बाद कितनी मुश्किल से अपनी लड़की को हास्टल के हवाले कर दिया– वह सैकड़ो मील दूर। अकेली अपने पिल्ले के साथ रह रही है।''6 इनकी 'पक्ष' कहानी के पति–पत्नी बीच तनाव भाई व समाज को लेकर चित्रित किया हैं। इस कहानी की नारी पात्र मनोरमा पति के द्वारा प्राइमरी स्कूल की अध्यापिका पद की अर्जी भरने हेतु प्रेरित करने पर, वह अपने पति से जिस प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त करती है। पहले उसे अपनी पत्नी को नौकरी कराने में समाज की शर्म थी। बाद में उसकी आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण नौकरी करने के लिए प्रेरित करता

1. रमेशचन्द्र शाह, आखिरी दिन, सांखला प्रिण्टर्स, बिकानेर, 1995 पृ025
2. रमेशचन्द्र शाह, अंधड (जंगल में आग) पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, 1994,पृ042
3. रमेशचन्द्र शाह, इस वक्त भालेराव (मानपत्र) वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर,1992,पृ048
4. रमेशचन्द्र शाह, आज की तारीख (थिएटर) वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर,1998,पृ0सं0128,134
5. रमेशचन्द्र शाह, इस वक्त भालेराव (मानपत्र) वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर,1992,पृ048
6. रमेशचन्द्र शाह, पक्ष (जंगल में आग) पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली,1994, पृ066

है; ''तुम्हे आज मुझे नौकरी कराने की सूझ रही है, आखिर क्यों? इसीलिए न कि भाई को भेजने के लिए पैसे कम पड़ रहे हैं और मैं तुम्हारें लिए आमदनी का एक जरिया बन सकती हूँ। उस वक्त तुमने क्या कहा था, क्या बहाना बनाया था? मैं क्या नहीं समझती तुम्हें मेरी सेहत ही नहीं, अपने सुभीते की चिन्ता थी।''7

रमेशचन्द्र शाह की 'विनायक' उपन्यास धर्म के नाम पर लूटपाट का चित्रण हुआ है। इस उपन्यास का पात्र धपोला धर्म के नाम पर लूटपाट बेइन्तहा ढकोसले को व्यक्त करता चित्रित हुआ हैं; ''अरे, कौन नहीं जानता कि धर्म-कर्म के नाम पर बेइन्तहा ठगी-लूटपाट, बेइन्तहा ढकोसले और एक से एक अनर्थ-अनाचार होते रहे हैं इस दुनिया में और आगे भी होते रहेंगे। मगर........ .. दूसरी ओर, जो ये धर्म-कर्म से कोई मतलब न रखने वाली, बल्कि, खुल्लमखुल्ला धर्मद्रोही यानी धर्मनिरपेक्ष और अपने को सौ टंच इंटेलैक्चुअल और परम पुण्यात्मा बताने वाली तथाकथित विचारधाराएँ हैं।''8

रमेशचन्द्र शाह कृत कहानी 'मानपत्र' समाज में वेशभूषा का मार्मिक चित्रण किया हैं। इस कहानी के प्रारम्भ में कहानी के पात्र सोहन चचा की वेशभूषा का चित्रण किया है; ''मलेसिया का कुरता और मलेसिया का पजामा, मुझे याद नहीं मैंने सोहन चचा को कभी किसी और भेष में देखा हो। कल्पना भी नहीं की जा सकती कि वे जब जनमे थे तो बिना मलेसिया के ही जनमे थे या कि जब स्वर्गारोहण करेंगे तो मलेसिया में ही नहीं करेंगे।''9 इसके अतिरिक्त इस कहानी का पात्र गणेश भी समाज में अपने परिवार की प्रतिष्ठा न होना का जिम्मेदार अपने ताऊ को ठहराता है : ''इज्जतदार लोग इज्जतदार की परवाह करेंगे कि ऐसे लोगों की ? ...... और ...... सच बात तो ये है मैं भी पहले यही समझता था कि ताऊ लोग ही जिम्मेदार हैं, हमारी बदहाली के लिए। वे ही जल्लाद हैं, हैवान है जो मेरे सामने साफ है कि वे जैसे भी थे, जो भी थे, इनमें भी कोई कसर नहीं थी। अपना ही माल खोटा हो तो परखैया का क्या दोष।''10

इनकी 'अभिभावक' कहानी के एकालापों के द्वारा बच्चे को समाज में शिक्षा प्राप्त करने के लिए उत्साहित व डॉठ देना। बच्चे के द्वारा स्कूल न जाने की जिद से उत्पन्न संघर्ष और अभिभावक के मन की खीज, निश्चित ही कहानी में अभिभावक द्वारा अपने बच्चे को समाज के प्रति जागरूक बनाना। ''नालायक! कामचोर, तू है कौन, मैं स्कूल नहीं जाऊँगा कहने वाला? क्या लाट साहब का बच्चा है?''11 इसी प्रकार इनकी 'अंधड़' कहानीकार के एकालापों के द्वारा जहां एक और मध्यम वर्ग के आम भारतीय समाज के संघर्ष को व्यक्त करता हैं। वहीं कहीं-न-कहीं मध्यम वर्गीय असंतोष का भी कारण बनता है: ''मैं तंग आ गया हूँ इस मकान से, न इसमें रह ही सकता हूँ, न इसे बदल ही सकता हूँ। उस अलाटमेण्ट अफसर के बच्चे से कई बार निहोरा कर चुका कोई सुनवाई नहीं। तीन साल अभी वेटिंग-लिस्ट में ही हूँ। कई बार सोचा कमिश्नर से सीधे ही मिलूँ पर वह तो ईश्वर से भी ज्यादा अगम्य है .... यहाँ भी सौदा है पर बेहद महंगा और टेढ़ा।''12

रमेशचन्द्र शाह द्वारा रचित 'अयोध्याकाण्ड' कहानी में समाज में जाति-भेद का उद्घाटन हुआ हैं। इस कहानी में निम्न जाति के संबद्ध लालू के द्वारा रामायण का गुटका खरीदने पर समाज के व्यक्ति द्वारा उसका अपमान करना चित्रित हुआ है: ''क्या जमाना आ गया है, अब भंगी भी रामायण पढेंगे ... मेरे चाचा ने कहा था, पहाड़ी सिब-सिब। छोरे की अक्कल तो देखो, श्रवण कुमार निकलेगा श्रवण कुमार। तुम देखना मेरी माँ ने कहा था। 'क्यों भव्वा अब तो तेरे घर में ही कथा होगी। अब तू काहे को हमारी रामायण में आने लगा।''13 रमेशचन्द्र शाह कृत 'विनायक' उपन्यास में तनाव एवं कुंठाग्रस्त चित्रित हुआ हैं। इस उपन्यास का पात्र विनायक समाज के उन लोगों को जुटाना चाहता हैं जिन्हें समाज की चिन्ता है। उन्हें न जुटा पाने के कारण वह तंनावग्रस्त चित्रित होता है। उदाहरण उद्धृत हैं : ''विनायक जिस मित्र-मंडली का, जिस राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय बौद्धिक बिरादरी का सदस्य मानता रहा हैं, अपने को मन ही मन, उसे सचमुच बनाने का, कम-से-कम अपने देश और समाज की सचमुच चिंता करने वाले रचनात्मक बुद्धि वाले लोगों को ही एक जगह जुटाने का सपना तो उसका अभी तक खाली सपना ही न रहा आया है! कहाँ है जरा भी गुंजाइश उसके लिए इस महानगरी बम्बई में?''14

इनकी 'गाँव की नदी' कहानी में ग्रामीण समाज का अंधविश्वास व्याप्त होता दिखाई देता हैं। जब गांववालों को गांव के पुजारी और गोपाल के प्रणय संबंधों का पता चलता है तो गांववासियों की इस विजातीय प्रणय प्रसंग पर व्यक्त की गई

7. वही,
8. रमेशचन्द्र शाह, विनायक, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,2011,पृ047
9. रमेशचन्द्र शाह, मानपत्र, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर,1992,पृ009
10. वही, पृ025

11. रमेशचन्द्र शाह, अभिभावक (मानपत्र) वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर,1992, पृ0119
12. रमेशचन्द्र शाह, अंधड़ (जंगल में आग) पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली,1994, पृ0सं039,40
13. रमेशचन्द्र शाह, अयोध्याकाण्ड (जंगल की आग) पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली,1994,पृ094

प्रतिक्रिया अंधविश्वास का उजागर होता है; ''पूरा गांव एक स्वर से कहने लगे कि ऐसी घटनाएं कोई एक जनम से थोड़ी निकलती है। यह तो पूर्व जन्म का रिश्ता था। पूर्वजन्म का।''15

रमेशचन्द्र शाह द्वारा रचित 'पुनर्वास' उपन्यास में समाज का अंधविश्वास व्याप्त होता दिखाई देता है। इस उपन्यास के पात्र लखनलाल जी और पाँडे जी के माध्यम से अंधविश्वास को व्यक्त किया गया हैं; ''लखनलाल जी और पाँडे जी का कहना है कि उन दिनों इस क्षेत्र में तांत्रिक साधना का बड़ा बोलबाला रहा। नेपाल से एक के बाद एक तंत्र-साधकों की लहर आई और उन्हें यहाँ बाकायदा राजकीय सम्मान और संरक्षण मिला। ये आसन और मुद्राएँ उसी तंत्र-साधना का अंग है। ऐसा उनका ख्याल है। विकृति तो विकृति ही है, उसकी इस तरह झाड़-फूँक नहीं की जा सकती। क्या यह हिंदू सभ्यता और संस्कृति की गिरावट का ही सूचक नहीं? इतिहास खुद गवाही दे रहा है इस सांस्कृतिक ह्रास ने ही हमको हर तरह से वेध्य बना दिया।''16

इनके द्वारा रचित 'मैं और असीम' कहानी में असीम के पिता के द्वारा भी भारतीय समाज की रूढ़िवादिता का मार्मिक उद्घाटन हुआ है। इस कहानी का नर पात्र असीम के द्वारा अपनी वागदत्ता को ठुकराकर आदिवासी क्षेत्र की लड़की से विवाह करने पर उसके पिता के अन्तर्मन में जो क्षोभ व्यक्त होता है उससे रूढ़िग्रस्तता ही व्यक्त होती है; ''ये क्या हो गया, देबू? तेरे रहते ये क्या कर लिया इस नालायक ने? कुछ तो समझाता इसे। वह मुझे देखते ही दौड़कर मुझसे लिपट गया था।''17

इनके द्वारा कृत 'आखिरी दिन' उपन्यास में मध्यम वर्गीय रुढ़िवादिता का निरुपण किया हैं। इस उपन्यास का पात्र नारायण समाज में स्थान न बना पाने के कारण रुढ़िवादिता की अग्रसर होते हुए कहता हैं: ''जाने किस किस की-जमाने भर की छूत मुझे लग गई हैं। कि मैं अपनी ही पहचान से, अपने ही स्वरूप से वंचित हो गया हूँ। सिर्फ औरों की नजर में ही नहीं, खुद अपने लिए भी मैं हास्यास्पद और संदिग्ध हो गया हूँ। क्या यह मेरा अपराध हैं? मेरी ऐसी दशा के लिए क्या मात्र मैं ही जिम्मेदार हूँ ?''18

इनकी 'अयोध्याकाण्ड' कहानी का पात्र लाल किशन बाल्मीकी का ईसाई बनने की विवशता उसकी आर्थिक विवशता ही रही हैं। आर्थिक कठिनाइयॉ और निम्न समाज के बीच सवर्णो की उपेक्षा के कारण उसका पिता भव्वा उसे ईसाई मिशनरियों को सौपता है ताकि वह पढ़-लिखकर समाज में सम्मानजनक जीवन जी सके। रमेशचन्द्र शाह की 'आशा की कहानी' के पात्र परमेश्वरी और आशा की चरित्रहीनता पर समाज के व्यक्ति द्वारा उसका विरोध व मारने-पीटने की सोच व्यक्त हुई हैं। आशा एक स्वच्छंद प्रवृत्ति के नवयुवक के रूप में चित्रित हुआ है: ''यह एक चुनौती थी- खुली चुनौती- जिससे निबटने को पूरा मुहल्ला कमर कस के तैयार बैठा था; ''आने दो साले को और उस मोहनिया की बच्ची को। देखते है कैसे इस मुहल्ले में घुसता है, मार-मार के भुरता निकाल देंगे साले का- उसने समझ क्या रखा हैं।''19

निष्कर्ष:

समाज के उच्च, मध्यम एवं निम्न वर्ग के जीवन संबद्ध कहानियाँ लिखी है किन्तु इनकी कथाओं के केन्द्र में मुख्य रूप से निम्न एवं मध्यम वर्ग का सार्वधिक चित्रण हुआ है। इनकी कथा साहित्य में विभिन्न क्षेत्रों के उच्च, मध्यम एवं निम्न वर्गीय जीवन के सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक और आर्थिक संदर्भ बराबर उद्घाटित हुए हैं। इनकी कथाओं में जहाँ एक ओर सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक विडम्बनाओं से संत्रस्त चरित्र दीखते हैं, वहीं समाज का उच्च वर्ग आर्थिक रूप से संपन्न सवर्ण वर्ग तथा राजनीति से संबद्ध व्यक्ति की अवसरवादिता स्वार्थनिष्ठा भ्रष्ट आचरण को व्यक्त करने में भी सफल हुई है। कहना यह है कि कुमाऊँ अंचल से संबद्ध कथाकारों के कथा साहित्य में प्रतिबिम्बित समाज विविधताओं से भरा है। एक ऐसी विविधता, जिसके अंचल से जहाँ एक ओर देश के सुदूर कुमाऊँ अंचल के सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, शिक्षा, आर्थिक कठिनाइयों का दंश झेलते चरित्र है तो दूसरी और नगरीय एवं महानगरीय जीवन से संबद्ध निम्न, मध्यम एवं उच्च वर्ग के सामाजिक एवं राजनैतिक सरोकार दिखते हैं। इनकी कहानियों में आम व्यक्ति का आत्मसंघर्ष सर्वाधिक मुखरित हुआ हैं। इन्होंने घटना, चरित्र और एकालाप प्रधान कहानियाँ लिखी हैं। इनकी एकालाप प्रधान कहानियां सर्वाधिक प्रभावशाली हैं। समकालीन जीवन संदर्भो के उद्घाटन में उन्होंने पर्याप्त सांकेतिकता, लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता और वैचारिकता का आश्रय लिया हैं। रमेशचन्द्र शाह की कथा साहित्य में समाज चेतना को लेकर कहीं-न-कहीं चिन्तन व मनन हुआ है।

14. रमेशचन्द्र शाह, विनायक, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,2011, पृ024
15. रमेशचन्द्र शाह, गाँव की नदी (मानपत्र) वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर,1992, पृ062
16. रमेशचन्द्र शाह, पुनर्वास, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर,2009,पृ023
17. रमेशचन्द्र शाह, मैं और असीम (थिएटर) वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर,1998,पृ046
18. रमेशचन्द्र शाह, आखिरी दिन, सांखला प्रिण्टर्स, बिकानेर,1995,पृ086
19. रमेशचन्द्र शाह, आशा की कहानी (मुहल्ले का रावण) संभावना प्रकाशन, हापुड़,1982,पृ018